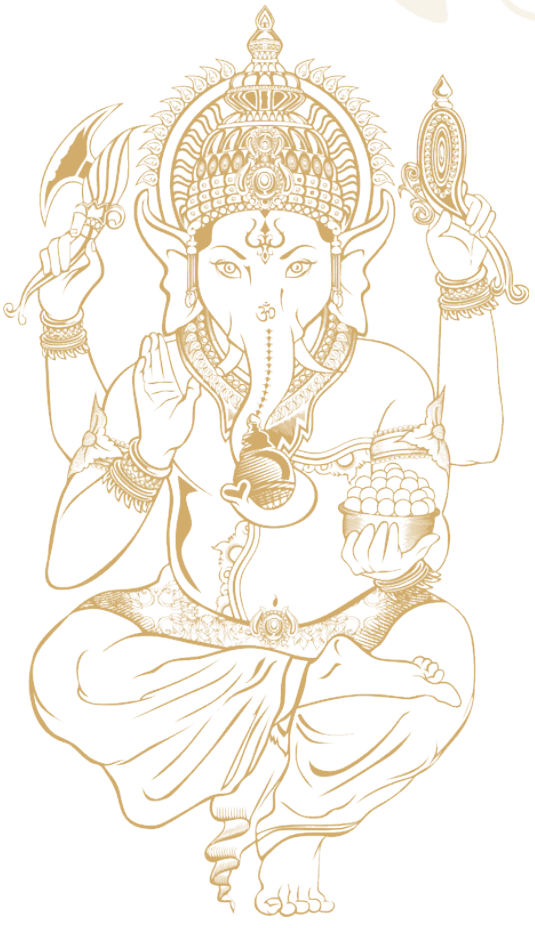

Girish

Daksha

Model: Web-FreeMatching

Order No: 120908508

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
10/11/1994	जन्म तिथि	23/11/1993
गुरुवार	दिन	मंगलवार
घंटे 10:30:00	जन्म समय	20:45:00 घंटे
घटी 09:10:51	जन्म समय(घटी)	34:26:43 घटी
India	देश	India
Ahmedabad	स्थान	Vadodara
23:03:00 उत्तर	अक्षांश	22:19:00 उत्तर
72:40:00 पूर्व	रेखांश	73:14:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:39:20	स्थानिक संस्कार	-00:37:04 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:49:39	सूर्योदय	06:54:46
17:56:46	सूर्यास्त	17:52:11
23:47:18	चित्रपक्षीय अयनांश	23:46:33

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
चन्द्र 0वर्ष 1मा 18दि	11:55:53	धनु	लग्न	मिथु	19:34:47	शनि 15वर्ष 9मा 5दि
गुरु	23:46:54	तुला	सूर्य	वृश्चि	07:34:38	बुध
29/12/2019	23:09:22	मक	चंद्र	मीन	05:36:10	30/08/2009
29/12/2035	24:53:22	कर्क	मंगल	वृश्चि	16:38:55	30/08/2026
गुरु 15/02/2022	05:46:55	तुला	बुध	तुला	17:59:54	बुध 27/01/2012
शनि 28/08/2024	29:45:46	तुला	गुरु	तुला	08:59:43	केतु 23/01/2013
बुध 04/12/2026	12:20:49	तुला व	शुक्र	तुला	24:27:55	शुक्र 24/11/2015
केतु 10/11/2027	11:53:30	कुंभ	शनि	कुंभ	00:27:28	सूर्य 29/09/2016
शुक्र 11/07/2030	21:00:52	तुला	राहु व	वृश्चि	09:16:21	चन्द्र 01/03/2018
सूर्य 29/04/2031	21:00:52	मेष	केतु व	वृष	09:16:21	मंगल 26/02/2019
चन्द्र 28/08/2032	29:14:36	धनु	हर्ष	धनु	25:47:01	राहु 14/09/2021
मंगल 04/08/2033	27:11:39	धनु	नेप	धनु	25:23:44	गुरु 21/12/2023
राहु 29/12/2035	03:46:17	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	01:53:13	शनि 30/08/2026

लग्न-चलित

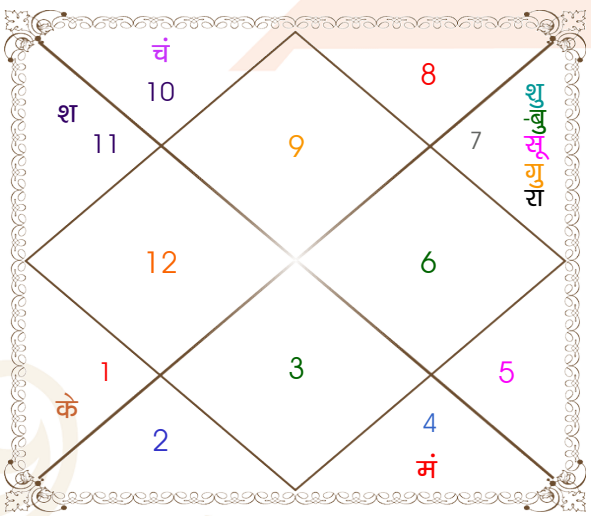

लग्न-चलित

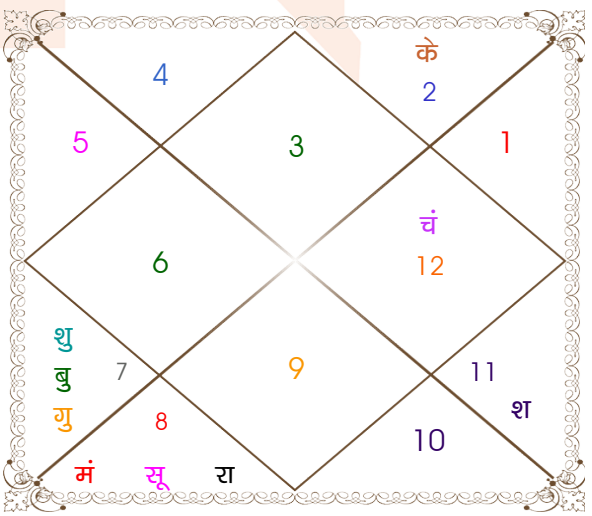

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	विप्र	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	जलचर	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	साधक	प्रत्यारि	3	1.50	--	भाग्य
योनि	वानर	गौ	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	शनि	गुरु	5	3.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मकर	मीन	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	29.50		

Girish का वर्ग मार्जार है तथा Daksha का वर्ग सर्प है। इन दोनों वर्गों में परस्पर मित्रता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Girish और Daksha का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

Girish मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल Girish कि कुण्डली में नीच का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

Daksha मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु Daksha कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता

है।

Girish तथा Daksha में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।